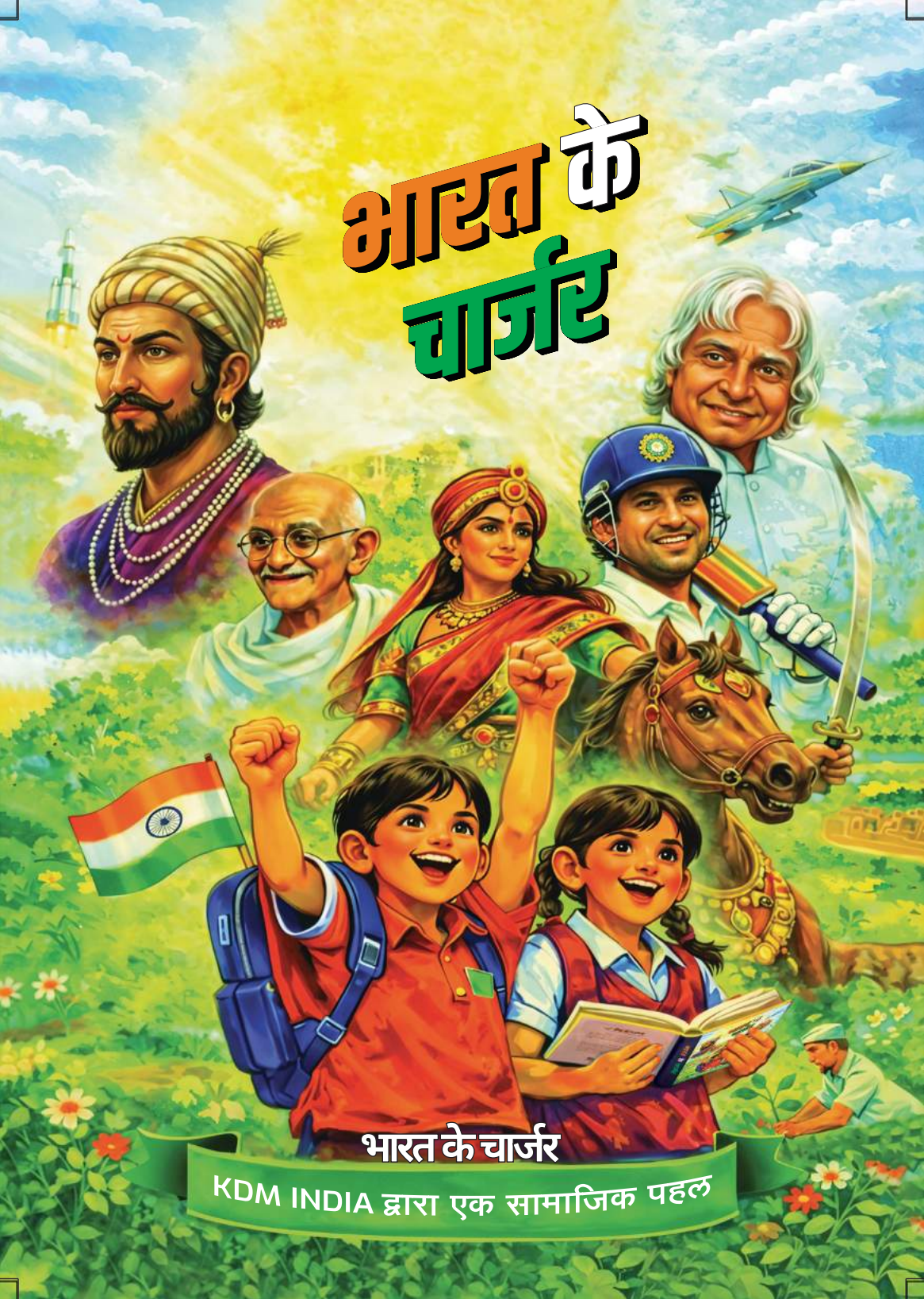


भारत के चार्जर



भारत के चार्जर

KDM INDIA द्वारा एक सामाजिक पहल

भारत के चार्ज



विकसित भारत की भावना को चार्ज
करने के लिए इस QR को स्कैन करें

राष्ट्रगान

जन गण मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशीष मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जन गण मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ॥

राष्ट्रीय गीत

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!
सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम्, मातरम्!
वंदे मातरम्!
शुभ्रज्योत्स्नाम् पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्!
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम् ॥
वंदे मातरम् के १५० वर्ष का उत्सव

भारत के चार्जर

हमारे वीरों को श्रद्धांजलि

कुछ वर्दियाँ कभी सेवानिवृत्त नहीं होतीं - वे सदैव प्रेरणा देती रहती हैं।

वर्दी का सम्मान, सेवज नीसिम फाउंडेशन की एक पहल है, जो भारत के सशस्त्र बलों की गौरवशाली विरासत को सम्मानित करती है। इस पहल के अंतर्गत हमारे वीर सैनिकों की सेवानिवृत्त वर्दियों को सार्थक उत्पादों में परिवर्तित कर उन्हें एक नया जीवन दिया जाता है। प्रत्येक उत्पाद उस वर्दी में निहित साहस, त्याग, गौरव और राष्ट्रसेवा की भावना को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का माध्यम बनता है।

इसी साझा संकल्प के साथ, KDM INDIA ने वर्दी का सम्मान के साथ हाथ मिलाया है, ताकि कृतज्ञता को सार्थक कार्यों में बदला जा सके। साथ मिलकर हम उन वास्तविक "भारत के चार्जर" - हमारे वीर सैनिकों और सुरक्षा बलों के जवानों को नमन करते हैं, जो हमारे राष्ट्र की रक्षा करते हैं, और प्रत्येक भारतीय को मेक इन इंडिया, सेवा, संवेदनशीलता और राष्ट्र निर्माण की इस यात्रा में सहभागी बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस सहयोग के अंतर्गत, भारत के चार्जर पुस्तक की प्रत्येक प्रति से प्राप्त लाभ का योगदान हमारे सशस्त्र बलों के जवानों के बच्चों की शिक्षा हेतु किया जाएगा, ताकि उन परिवारों को सहयोग मिल सके जिन्होंने हमारे सुरक्षित भविष्य के लिए अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया।

उनकी वर्दी भले ही सेवानिवृत्त हो जाए, लेकिन उनका जज़्बा कभी नहीं। आइए, मिलकर उनकी इस अमर विरासत को आगे बढ़ाएँ।

जय हिंद!



कॉपीराइट © 2026, KDM India (एन. डी. माली)

सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस पुस्तक को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तकनीक की सहायता से तैयार किया गया है।

यह एक काल्पनिक कृति है। इस पुस्तक में वर्णित पात्र घटनाएँ और स्थान लेखक की कल्पना का परिणाम हैं। वास्तविक जीवन के किसी भी व्यक्ति (जीवित या मृत), संस्था या घटना से कोई भी समानता मात्र संयोग मानी जाएगी।

लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक माध्यम (जैसे फोटोकॉपी, रिकार्डिंग या सूचना संग्रहीत करने की अन्य विधियाँ) द्वारा पुनः प्रकाशित, कॉपी या वितरित नहीं किया जा सकता है। केवल पुस्तक समीक्षा के उद्देश्य से छोटे अंशों का उपयोग किया जा सकता है।

ISBN 978-93-92546-75-4

#108, 1st फ्लोर, 3rd क्रॉस, 8th मेन, पिल्लन्ना गार्डन, बैंगलोर 560045
द्वारा प्रकाशित



लेखक की बात

डिजिटल शोर से भरी आज की दुनिया में मेरा मानना है कि एक पुस्तक जो गहरा प्रभाव डाल सकती है वह कोई भी स्क्रीन नहीं कर सकती। किताब बच्चे को शांति से बैठकर एकाग्र होने में मदद करती है, उसकी कल्पनाशक्ति को पंख देती है और उसे अपने अंतरात्मा की आवाज़ सुनना सिखाती है।

आज हम ऐसी पीढ़ी को देख रहे हैं जो लगातार विचलित करने वाले उपकरणों और भागदौड़ भरी जिंदगी में जी रही है। इस के कारण उनकी एकाग्रता घटती है और संस्कारों को विकसित करने का काम कठिन होता जा रहा है। मेरे विचार से वर्तमान समय का यह सबसे गंभीर प्रश्न है।

मैंने “भारत के चार्जर” को पढ़ने की आदत को पुनर्जीवित करने के एक विनम्र प्रयास के रूप में लिखी है। बाल भारती की परंपरा से प्रेरित होकर मेरा उद्देश्य भारत के ऐसे सच्चे नायकों की कहानियाँ प्रस्तुत करना है, जो शांति और निस्वार्थ भाव से देश की सेवा कर रहे हैं। मैं चाहता था कि बच्चे ऐसे वास्तविक नायकों से परिचित हो, जिनके जीवन के साथ वे जुड़ाव महसूस कर सकें और जिन के गुण उन्हें प्रेरणा दे।

इस प्रयास को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रोत्साहन से भी प्रेरणा मिली। “परीक्षा पे चर्चा” और “मन की बात” जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने कहानी कहने की शक्ति और युवाओं में पढ़ने की आदत के महत्व पर बार-बार जोर दिया है। उनका यह संदेश मेरे दिल को छु गया कि जब बच्चे हमारे राष्ट्रीय आदर्शों के जीवन और मूल्यों के बारे में पढ़ते हैं, तो वे अपना चरित्र बनाना शुरू करते हैं और उनके भीतर नेतृत्व की भावना भी विकसित होती है। कहानियाँ केवल जानकारी नहीं देती। वे बच्चों के मन में प्रेरणा भी जगाती हैं।

निजी स्तर पर यह सफर मेरे लिए बेहद आत्मिक भी रहा। कृतज्ञ हृदय और पूर्ण समर्पण के साथ, मैं यह किताब नीम करोली बाबा (महाराज जी) की कृपा को अर्पित करता हूँ, जिनके असीम प्रेम में मुझे लगता है ये शब्द मेरे जरिये लिखे गए। मैं इसे राधा रानी के शाश्वत प्रेम को समर्पित करता हूँ, और प्रेमानंद जी महाराज के चरणों में, जिनकी जीवंत शिक्षाएँ भक्ति, सरलता और अपने सृजनहार से एकता के बोध के जरिये आज भी युवा हृदयों को जगा रही हैं। मुझे उम्मीद है कि यह किताब उस प्रेम की एक छोटी सी झलक लेकर चले और विनम्रता से सेवा करे।

मैंने यह पुस्तक केवल बच्चों के लिए ही नहीं, बल्कि अभिभावकों (माता-पिता), शिक्षकों और युवाओं को ध्यान में रखकर भी लिखी है। तकनीक से भरे इस समय में मुझे लगा कि कहानियों के माध्यम से मानवीय संबंधों को फिर से मजबूत करना ज़रूरी है। ऐसे रिश्ते जिनका निर्माण जिन्हें कोई डिजिटल स्क्रीन कभी नहीं कर सकती।

अगर हम विकसित भारत का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें सबसे पहले शिक्षित भारत बनाना होगा। ऐसा भारत जो वैचारिक शक्ति, संवेदनशीलता, चरित्र और राष्ट्रीय चेतना से समृद्ध हो। जब बच्चे इन मूल्यों को अपनाते हैं, तब वे केवल इतिहास की प्रशंसा ही नहीं करते, बल्कि उज्ज्वल भविष्य की रचना करते हैं।

कहानियों की शक्ति में विश्वास और हर बच्चे की क्षमता पर भरोसे के साथ, मैं यह पुस्तक विकसित भारत के भविष्य रूपी बच्चों को समर्पित करता हूँ।

सचिन आर. रूपारेल

लेखक,

भारत के चार्जर

संस्थापक की बात

जिस नेतृत्व ने भारत का निर्माण किया, उन्होंने न केवल इतिहास रचा है, बल्कि **आने वाली पीढ़ियों को मूल्यों, साहस और उद्देश्य की भावना से चार्ज भी किया है।** उनका जीवन हमें यह याद दिलाता है कि सच्चा नेतृत्व सही विचारों, करुणा से भरे हृदय और जिम्मेदारीपूर्ण कार्यों से शुरू होता है।

आज की गतिशील और डिजिटल दुनिया में बच्चों को ऐसी कहानियों की आवश्यकता है जो उन्हें पल भर रुककर सोचने, खुद को समझने और अपनी आंतरिक शक्ति पर विश्वास रखने के लिए प्रेरित करें। **“भारत के चार्जर”** ऐसी ही कहानियाँ युवा पाठकों तक पहुँचाता है। यह उन प्रभावशाली व्यक्तियों की कहानियाँ हैं जिनके निर्णयों, अनुशासन और सेवाभाव ने देश को एक मजबूत आकार दिया। ये कहानियाँ हमें सिखाती हैं कि नेतृत्व का मतलब केवल सत्ता या पद नहीं है, बल्कि नेक स्वभाव, उच्च मूल्य और देश के लिए निस्वार्थ योगदान है।

यह पुस्तक बच्चों को **विकसित भारत** के भविष्य के वाहक के रूप में खुद को देखने के लिए प्रेरित करती है। यह उन्हें याद दिलाती है कि हर बच्चे के भीतर सकारात्मक बदलाव लाने की शक्ति छिपी हुई है। ईमानदारी से सोचना, जिम्मेदारी से काम करना और गर्व के साथ राष्ट्र की सेवा करना ही सच्ची प्रगति का मार्ग है। मुझे आशा है कि ये कहानियाँ बच्चों के मन में आत्मविश्वास, जिज्ञासा और उद्देश्य की भावना जगाएँगी, ताकि वे आगे चलकर ऐसे जिम्मेदार नागरिक बनें जो विश्वास, करुणा और समर्पण के साथ भारत को परम वैभव की ओर आगे ले जाएँ।

इस अवसर पर मैं अपनी शक्ति के शाश्वत स्रोत **भगवान स्वामिनारायण** के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। उनकी कृपा और आशीर्वाद मुझे निरंतर आगे बढ़ने और राष्ट्र के लिए कुछ भव्य तथा अर्थपूर्ण कार्य करने की प्रेरणा देते हैं।

निलेश माली

संस्थापक, चेयरमन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर,
KDM INDIA

आभार

हर सार्थक यात्रा की शुरुआत संसाधनों से नहीं, बल्कि विश्वास से होती है। भारत के चार्जर को हमने कभी केवल एक किताब के रूप में नहीं देखा, यह एक जिम्मेदारी के रूप में सामने आया - भारत के बच्चों के प्रति और उन मूल्यों के प्रति, जो हमारे राष्ट्र के भविष्य को दिशा देते हैं।

KDM INDIA में हमारा हमेशा यह विश्वास रहा है कि राष्ट्र निर्माण केवल कारखानों, नीतियों, उत्पादों या वितरण नेटवर्क के माध्यम से ही नहीं होता। राष्ट्र निर्माण मूल्यों से होता है। वह कहानियों से होता है। वह तब होता है जब युवा मन सही भावनाओं, अनुशासन और सही दिशा से प्रेरित होते हैं। यह पुस्तक उसी विश्वास का एक प्रतिबिंब है।

इस पुस्तक की नींव KDM INDIA के संस्थापक और अध्यक्ष **एन. डी. माली** के दृष्टिकोण और विश्वास से मजबूत हुई। उनका यह विश्वास है कि भारत के चार्जर एक विचार से आगे बढ़कर बच्चों के लिए एक पुस्तक बने, और उनका यह भरोसा है कि राष्ट्र निर्माण कहानियों और मूल्यों के माध्यम से भी होता है, इस पहल को हमने सही दिशा और उद्देश्य दिया।

सबसे पहले हम **सचिन आर. रूपरेल**, भारत के चार्जर के लेखक और संयोजक, के प्रति अपनी गहरी सराहना व्यक्त करते हैं। उन्होंने केवल पन्ने नहीं लिखे, बल्कि एक उद्देश्य को आगे बढ़ाया। उनके समर्पण ने एक विचार को विकसित भारत की दिशा में एक जीवंत योगदान में बदल दिया। इसके लिए हम हृदय से आभारी हैं।

हम **भंवरलाल एच. सुथार** के शांत प्रोत्साहन और अटूट विश्वास के लिए भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने इस पहल को उसके शुरुआती चरण से ही मजबूत बनाया।

हम **मनीषा मांगे रूपरेल** के प्रति भी अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। उनके स्पष्ट विचार, सुव्यवस्थित कार्यशैली और अडिग विश्वास ने इस दृष्टि को गहराई और सही दिशा के साथ आगे बढ़ने में मदद की।

हम **अनिकेत पोहनकर** को भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने पूरे प्रोजेक्ट में जिम्मेदारी लेते हुए शुरुआत से अंत तक सुचारु समन्वय सुनिश्चित किया।

प्रेम पाडिया और **कृपा उदेशी** का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने ऐसा डिज़ाइन तैयार किया जो बच्चों तक सहज और सरल भाषा में पहुँचता है, और साथ ही मजबूत मूल्यों को भी व्यक्त करता है।

राज साहू और ललित बैरागी को उनके सावधानीपूर्वक प्रूफरीडिंग और लेखन सामग्री को बेहतर बनाने के प्रयासों के लिए विशेष धन्यवाद, जिससे गुणवत्ता का उच्च स्तर सुनिश्चित हुआ।

हम ओमकार शिंदे और साक्षी लुनावत के भी आभारी हैं, जिन्होंने इस पुस्तक की दृश्य पहचान और कवर डिज़ाइन को आकार दिया।

हम नरेश माली के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने सामग्री को सुव्यवस्थित रूप से संकलित कर उसे पुस्तक के अंतिम रूप में प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

विमल शुक्ला के शांत सहयोग और समर्थन का भी विशेष उल्लेख करना चाहेंगे। उनकी गर्मजोशी हमें यह याद दिलाती है कि हर छोटा योगदान भी महत्वपूर्ण होता है।

अंत में, हमारा विशेष आभार पूरे KDM INDIA परिवार के प्रति है। भारत के चार्जर किसी एक व्यक्ति की उपलब्धि नहीं है। यह हमारे उस सामूहिक विश्वास का प्रतिबिंब है कि व्यापार केवल व्यवसाय तक सीमित नहीं होना चाहिए; उसे समाज की सेवा और राष्ट्र की प्रगति को भी आगे बढ़ाना चाहिए।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक पूरे भारत के बच्चों के दिलों को प्रेरित करेगी। यह उनमें जिम्मेदारी की भावना जगाए, उनके चरित्र को मजबूत करे और उन्हें विकसित भारत की दिशा में सार्थक योगदान देने के लिए प्रेरित करे।

गर्व और कृतज्ञता के साथ,

KDM India

पुस्तक के बारे में

भारत के चार्जर: युवा पाठकों के लिए प्रेरणादायक कहानियाँ

क्या ऐसा हो सकता है की कोई पुस्तक न केवल जानकारी दे, बल्कि हमारे अंतर्मन में कुछ नया जागृत भी करे?

“भारत के चार्जर” कोई सामान्य पाठ्य-पुस्तक नहीं है, बल्कि एक अनोखा अनुभव है। यह सच्ची और जीवन से जुड़ी ऐसी कहानियों का सफर है, जो पाठक में साहस, मूल्यों और जीवन के उद्देश्य की भावना जगाता है। डिजिटल स्क्रीन और लगातार शोर से भरी दुनिया में यह पुस्तक बच्चों, माता-पिता और शिक्षकों को एक पल ठहरने, सोचने और उन बातों से फिर से जुड़ने के लिए आमंत्रित करती है जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं।

सरल और रोचक शैली में लिखी गई इन कहानियों के माध्यम से युवा पाठक ऐसे वास्तविक आदर्शों से मिलेंगे, जो साधारण लोग होने के बावजूद असाधारण निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। ये कहानियाँ बच्चों और युवाओं को अपने भीतर की शक्ति पहचानने, दूसरों के प्रति संवेदनशील बनने, अनुशासन अपनाने और आत्मविश्वास विकसित करने की प्रेरणा देती हैं। हर कहानी धीरे से एक सवाल पूछती है - “मैं कैसा इंसान बनना चाहता हूँ?”

इस पुस्तक के केंद्र में एक सशक्त विचार है। प्रत्येक पाठक एक “चार्जर” बन सकता है। ऐसा व्यक्ति जो अपने आसपास की दुनिया में सकारात्मक ऊर्जा, अच्छाई और बदलाव ला सके।

सरल और आत्मीय भाषा में लिखी गई यह पुस्तक अकेले पढ़ने, साथ मिलकर जोर से पढ़ने और आपस में चर्चा करने के लिए बनाई गई है। इस पुस्तक के पन्नों को खोलिए और एक ऐसी यात्रा शुरू कीजिए जो केवल जानकारी नहीं देती, बल्कि भीतर बदलाव भी लाती है।

अनुक्रमणिका

भाग १: योद्धा - स्वाधीनता के चार्जर

१. छत्रपति शिवाजी महाराज - स्वाभिमान और साहस के चार्जर.....	०१
२. श्री कृष्णदेवराय - समृद्धि और नेतृत्व के चार्जर.....	०३
३. महाराणा प्रताप - स्वाभिमान और स्वतंत्रता के चार्जर.....	०५
४. वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई - साहस के चार्जर.....	०७
५. महाराजा रणजीत सिंह - एकता और शक्ति के चार्जर.....	०९

भाग २: वैज्ञानिक एवं नवप्रवर्तक - आविष्कार के चार्जर

१. सी. वी. रमन - लाइट के चार्जर.....	११
२. होमी जे. भाभा - परमाणु शक्ति और विज्ञान के चार्जर.....	१३
३. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम - विज्ञान और युवाशक्ति के चार्जर.....	१५
४. के. सिवन - अंतरिक्ष सपनों के चार्जर.....	१७
५. कल्पना चावला - अंतरिक्ष प्रेरणा के चार्जर.....	१९

भाग ३: शूरवीर और सैनिक - रक्षा के चार्जर

१. फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ - सैन्य नेतृत्व के चार्जर.....	२१
२. फील्ड मार्शल के. एम. करिअप्पा - अनुशासन के चार्जर.....	२३
३. कैप्टन विक्रम बत्रा - कारगिल वीरता के चार्जर.....	२५
४. मेजर सोमनाथ शर्मा - प्रथम परमवीर चक्र के चार्जर.....	२७
५. राइफलमैन जसवंत सिंह रावत - आस्था और कर्तव्य के चार्जर.....	२९

भाग ४: स्वतंत्रता सेनानी - आज़ादी के चार्जर

१. महात्मा गांधी - सत्य और अहिंसा के चार्जर.....	३१
२. सरदार वल्लभभाई पटेल - एकता और दृढ़ संकल्प के चार्जर.....	३३
३. बाल गंगाधर तिलक - जागृति के चार्जर.....	३५
४. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद - ज्ञान के चार्जर.....	३७
५. सरोजिनी नायडू - प्रेरणा के चार्जर.....	३९

भाग ५: उद्योगपति - विकास के चार्जर

१. जमशेदजी टाटा - औद्योगिक दृष्टि के चार्जर.....	४१
२. घनश्याम दास बिरला - व्यापार और देशभक्ति के चार्जर.....	४३
३. जमनालाल बजाज - सेवा और स्वदेश के चार्जर.....	४५
४. अज़ीम प्रेमजी - परोपकार के चार्जर.....	४७
५. धीरूभाई अंबानी - व्यावसायिक सपनों को ऊर्जा देने वाले चार्जर.....	४९

भाग ६: क्रांतिकारी - निडर स्वतंत्रता के चार्जर

१. नेताजी सुभाष चंद्र बोस - राष्ट्रीय गर्व के चार्जर..... ५१
२. चंद्रशेखर आज़ाद - अटूट स्वतंत्रता के चार्जर..... ५३
३. भगत सिंह - बलिदान के चार्जर..... ५५
४. सुखदेव थापर - क्रांतिकारी साहस के चार्जर..... ५७
५. शिवराम हरी राजगुरु - निडर कर्म के चार्जर..... ५९

भाग ७: खिलाड़ी - हौसला और जुनून के चार्जर

१. मेजर ध्यानचंद - हॉकी के चार्जर..... ६१
२. मिल्खा सिंह - गति के चार्जर..... ६३
३. पी. टी. उषा - दृढ़ संकल्प के चार्जर..... ६५
४. कपिल देव - वर्ल्ड कप विजय के चार्जर..... ६७
५. अभिनव बिंद्रा - ओलंपिक स्वर्ण के चार्जर..... ६९

भाग ८: समाज सुधारक और चिंतक - परिवर्तन के चार्जर

१. स्वामी विवेकानंद - युवा ऊर्जा के चार्जर..... ७१
२. राजा राम मोहन राय - सामाजिक सुधार के चार्जर..... ७३
३. डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर - न्याय के चार्जर..... ७५
४. अरुणा आसफ अली - साहस और प्रतिरोध के चार्जर..... ७७
५. सावित्रीबाई फुले - बालिका शिक्षा के चार्जर..... ७९

भाग ९: आधुनिक नायक - नए भारत के चार्जर

१. नरेंद्र मोदी - राष्ट्रीयता और विकास के चार्जर..... ८१
२. सचिन तेंदुलकर - क्रिकेट के सपनों के चार्जर..... ८३
३. सुंदरराजन पिचाई - वैश्विक तकनीक के चार्जर..... ८५
४. कैलाश सत्यार्थी - बाल अधिकारों के चार्जर..... ८७
५. नीरज चोपड़ा - गोल्डन जैवलिन के चार्जर..... ८९

भाग १०: कलाकार - संस्कृति के चार्जर

१. बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय - राष्ट्र चेतना के चार्जर ९१
२. लता मंगेशकर - सुरों के चार्जर ९३
३. पंडित रवि शंकर - सितार के तारों के चार्जर ९५
४. उस्ताद बिस्मिल्लाह खान - शहनाई के सुरों के चार्जर ९७
५. अमिताभ बच्चन - अभिनय की ऊर्जा के चार्जर ९९

भाग ११: प्रगतिशील भारत के नेता - प्रगति के चार्जर

१. डॉ. राजेंद्र प्रसाद - समर्पण और लोकतंत्र के चार्जर १०१
२. लाल बहादुर शास्त्री - ईमानदारी और सादगी के चार्जर १०३
३. पी. वी. नरसिंह राव - भारत के आर्थिक नवोदय के चार्जर १०५
४. अटल बिहारी वाजपेयी - विचार और राष्ट्र के चार्जर १०७
५. डॉ. मनमोहन सिंह - वित्तीय दृष्टि के चार्जर १०९

भाग १२: पर्यावरण और कृषि के प्रणेता - धरती के चार्जर

१. सुंदरलाल बहुगुणा - हरित हिमालय के चार्जर..... १११
२. जादव पायेंग - वनों के चार्जर..... ११३
३. कमला पुजारी - जैविक खेती के चार्जर..... ११५
४. डॉ. सलीम अली - पक्षी जीवन के चार्जर..... ११७
५. डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन - खाद्य सुरक्षा के चार्जर..... ११९

भाग १३: युवा नायक और भविष्य के नेता - आने वाले कल के चार्जर

१. विराट कोहली - जीत के जड़बे का चार्जर..... १२१
२. हिमा दास - स्प्रिंट सपनों के चार्जर १२३
३. गुकेश दोम्मराजू - चेस ब्रिलियंस के चार्जर..... १२५
४. शीतल देवी - दृढ़ निश्चय और असीमित आत्मबल के चार्जर..... १२७
५. श्रीकांत बोला - दृष्टि से परे सोच के चार्जर..... १२९

भाग १

भारत के चार्जर

योद्धा

स्वाधीनता के चार्जर

भारत के चार्जर

छत्रपति शिवाजी महाराज

स्वाभिमान और साहस के चार्जर

१९ फरवरी १६३० – ०३ अप्रैल १६८०

१. परिचय

एक समय ऐसा था, जब भारत अन्याय और भय की छाया में था, उसी समय शिवनेरी किले में जन्मे एक बालक ने इस अंधकार को चुनौती देने का संकल्प लिया। १९ फरवरी १६३० को शिवनेरी किले, महाराष्ट्र में जन्मे छत्रपति शिवाजी महाराज ने न केवल युद्ध लड़े, बल्कि लोगों के दिलों में एक ऐसा विश्वास जगाया कि “गुलामी की जंजीरें तब टूटती हैं, जब कोई उन्हें तोड़ने की हिम्मत करता है।” यह कहानी है उस बालक की, जिसने हालातों को स्वीकार नहीं किया, बल्कि उन्हें बदलने का निर्णय लिया।

२. कहानी

शिवाजी महाराज का बचपन केवल बीत नहीं रहा था, बल्कि गढ़ा जा रहा था। उनकी माता, जीजाबाई, उन्हें रामायण और महाभारत की कहानियाँ सुनाती थीं, जिनसे उनके भीतर धर्म, न्याय और वीरता की ज्वाला प्रज्वलित हुई। दादोजी कोंडदेव ने उन्हें शस्त्रविद्या, घुड़सवारी, प्रशासन और युद्धकौशल का प्रशिक्षण दिया, जिसने उनके नेतृत्व और व्यक्तित्व की मजबूत नींव रखी। किले की ऊंचाइयों से अपनी भूमि को देखते हुए उनके मन में एक संकल्प जन्मा, “यह भूमि हमारी है, और इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।” यहीं से स्वराज्य उनका लक्ष्य बन गया।

बचपन से ही उन्होंने साथियों को संगठित किया और नेतृत्व व रणनीति सीखनी शुरू की। युवावस्था में उन्होंने पहला बड़ा कदम उठाया और तोरणा किला जीत लिया। यह केवल जीत नहीं, बल्कि उनके संकल्प की शुरुआत थी। शिवाजी महाराज ने समझ लिया था कि केवल ताकत से जीतना संभव नहीं है। इसलिए उन्होंने “गनिमी कावा” (गुरिला युद्ध पद्धति) अपनाया। उनके अचानक हमले और तेज वापसी ने दुश्मनों को असहाय बना दिया।

उनकी बुद्धिमत्ता की परीक्षा तब हुई, जब अफजल खान ने उन्हें धोखे से मारने की योजना बनाई। लेकिन शिवाजी महाराज सतर्क थे। जैसे ही हमला होते ही उन्होंने साहस और सूझबूझ से उसे परास्त कर दिया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि सच्ची जीत ताकत से नहीं, बुद्धिमत्ता से मिलती है। संघर्ष और विजय की इस यात्रा के बाद, १६७४ में उनका राज्याभिषेक हुआ और वे “छत्रपति” बने। उनका शासन न्याय, सम्मान और समानता पर आधारित था।



शिवाजी महाराज उस उगते सूरज की तरह थे,
जिसकी पहली किरण ने अंधकार में डूबे राष्ट्र में स्वाभिमान की रोशनी जगा दी।

अपनी प्रजा को सुरक्षा, सम्मान और बेहतर जीवन देकर उनके हृदयों में अटूट विश्वास और सम्मान अर्जित किया। उन्होंने पूरे राष्ट्र को स्वाभिमान और साहस से चार्ज किया, जिससे भय की जगह आत्मविश्वास ने जन्म लिया। उनका जीवन हमें सिखाता है कि जब संकल्प अटल हो, तो हर बाधा सफलता की सीढ़ी बन जाती है।

३. मूल्य और सीख

- अपने लक्ष्य के प्रति अटल संकल्प रखें।
- साहस के साथ बुद्धिमत्ता का उपयोग करें।
- अपने देश और संस्कृति का गर्व से सम्मान करें।
- अन्याय के सामने कभी न झुकें।
- सच्चा नेता वही है, जो दूसरों में शक्ति जगाए।

४. संक्षेप

- तोरणा किला जीतकर मराठा शक्ति की शुरुआत की।
- गुरिल्ला युद्ध नीति से शक्तिशाली दुश्मनों को परास्त किया।
- १६७४ में छत्रपति बने।
- भारत को स्वराज्य, साहस और आत्मविश्वास से चार्ज किया, इसलिए उन्हें “भारत के चार्जर” के रूप में याद किया जाता है।

“

ज्ञान की ज्योति

“हर व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। क्योंकि कई बार युद्ध ताकत से नहीं, ज्ञान और बुद्धि से जीता जाता है।”

— छत्रपति शिवाजी महाराज

”

५. अभ्यास

- जीजाबाई ने शिवाजी महाराज को किन ग्रंथों की कहानियाँ सुनाईं?
- शिवाजी महाराज ने सबसे पहले कौन सा किला जीता?
- शिवाजी महाराज किस युद्ध नीति के लिए प्रसिद्ध थे?
- अफजल खान की घटना में शिवाजी महाराज की कौन सी विशेषता दिखाई दी?

६. प्रेरणास्रोत

“शिवाजी महाराज की तरह आप अपने जीवन में कौन सा ऐसा साहसी निर्णय ले सकते हैं, जो आपको मजबूत बनाए?”



— एक सामाजिक पहल —
KDM
भारत का
चार्जर

भारत के चार्जर

श्री कृष्णदेवराय

समृद्धि और नेतृत्व के चार्जर

१७ जनवरी १४७१ – १७ अक्टूबर १५२९

१. परिचय

जब दक्षिण भारत में कई राज्यों के बीच संघर्ष और अस्थिरता थी, तब एक ऐसा शासक उभरा जिसने अपने नेतृत्व से न केवल अपने राज्य को सुरक्षित किया, बल्कि उसे समृद्ध किया और समृद्धियों के शिखर तक पहुंचाया। १७ जनवरी १४७१ में हम्पी, कर्नाटक में जन्मे श्री कृष्णदेवराय विजयनगर साम्राज्य के महान सम्राट थे। वे केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी शासक थे, जिन्होंने अपने निर्णयों से अपने राज्य की दिशा बदल दी। यह कहानी है उस राजा की, जिसने शक्ति और बुद्धिमत्ता से अपने राज्य को एक आदर्श साम्राज्य में बदल दिया।



२. कहानी

श्री कृष्णदेवराय का बचपन राजसी वातावरण में बीता, लेकिन उन्हें केवल वैभव नहीं, बल्कि कर्तव्य और जिम्मेदारी का महत्व भी सिखाया गया। उन्होंने युद्ध कला के साथ-साथ प्रशासन और साहित्य का भी गहन अध्ययन किया। बचपन से ही उनमें नेतृत्व के गुण दिखाई देते थे। वे समझते थे कि एक सच्चा राजा वही होता है, जो अपनी प्रजा के सुख-दुख को समझे और उनके लिए सही निर्णय ले।

१५०९ में, वे विजयनगर साम्राज्य के राजा बने। उस समय राज्य को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। लेकिन उन्होंने अपने साहस और रणनीति से इन कठिनाइयों को अवसर में बदल दिया। उन्होंने कई युद्धों में विजय प्राप्त की और अपने साम्राज्य की सीमाओं को मजबूत किया। उनकी नेतृत्व क्षमता ने विजयनगर को दक्षिण भारत का एक शक्तिशाली साम्राज्य बना दिया। लेकिन उनकी महानता केवल युद्ध तक सीमित नहीं थी। उन्होंने अपने राज्य में कृषि, व्यापार और सिंचाई व्यवस्था को भी प्रोत्साहित किया, जिससे प्रजा का जीवन समृद्ध और सुरक्षित हुआ। उनके शासन में लोग न केवल सुरक्षित थे, बल्कि खुशहाल भी थे।

वे साहित्य और ज्ञान के भी बड़े संरक्षक थे। उनके दरबार में “अष्टदिग्गज” नाम के आठ महान विद्वान थे, जिन्होंने साहित्य को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। स्वयं श्री कृष्णदेवराय भी एक विद्वान लेखक थे। उन्होंने तेलुगु भाषा में “अमुक्तमाल्यदा” नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की, जिसमें एक आदर्श राजा के कर्तव्यों और प्रजा के प्रति उसकी

श्री कृष्णदेवराय उस विशाल वटवृक्ष की तरह थे,
जिसकी छत्र छाया में पूरा राज्य सुरक्षित, समृद्ध और संतुलित होकर फलता-फूलता रहा।

जिम्मेदारी का वर्णन किया गया है।

उन्होंने यह सिद्ध किया कि एक महान शासक केवल युद्ध जीतने से नहीं, बल्कि अपने लोगों के जीवन को बेहतर बनाने से महान बनता है। उन्होंने अपने नेतृत्व और दूरदर्शिता से अपने राज्य को समृद्धि, सुरक्षा और सम्मान से चार्ज किया, जिससे विजयनगर साम्राज्य अपने समय का सबसे विकसित और शक्तिशाली राज्य बन गया।

३. मूल्य और सीख

- शक्ति के साथ दूरदर्शिता भी जरूरी है।
- शिक्षा और ज्ञान विकास की नींव होते हैं।
- सफलता केवल जीत में नहीं, समृद्धि लाने में भी है।
- एक अच्छा नेता सभी क्षेत्रों का संतुलन बनाता है।

४. संक्षेप

- बचपन से ही नेतृत्व और जिम्मेदारी के गुण विकसित किए।
- १५०९ में विजयनगर साम्राज्य के राजा बने।
- युद्धों में विजय प्राप्त कर राज्य को मजबूत बनाया।
- कृषि, व्यापार और साहित्य को बढ़ावा दिया।
- अपने नेतृत्व से राज्य को समृद्धि और सुरक्षा से चार्ज किया, इसलिए उन्हें “भारत के चार्जर” के रूप में याद किया जाता है।

“

ज्ञान की ज्योति

“सच्चा नेतृत्व वही है, जो अपनी शक्ति का उपयोग लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए करता है।”

- श्री कृष्णदेवराय से प्रेरित ”

५. अभ्यास

- वे किस साम्राज्य के शासक बने थे?
- उनके दरबार के विद्वानों को क्या कहा जाता था?
- “अमुक्तमाल्यदा” क्या है?
- उन्होंने अपने राज्य में किन क्षेत्रों को विकसित किया?

६. प्रेरणास्रोत

“आप अपने जीवन में ऐसा कौन सा गुण विकसित कर सकते हैं श्री कृष्णदेवराय की तरह, जिससे आप दूसरों के लिए एक अच्छे नेता बन सकें?”



— एक सामाजिक पहल —
KDM
भारत का
चार्जर

भारत के चार्जर

महाराणा प्रताप

स्वाभिमान और स्वतंत्रता के चार्जर

९ मई १५४० – १९ जनवरी १५९७

१. परिचय

जब भारत की धरती पर शक्तिशाली साम्राज्य अपना प्रभुत्व बढ़ा रहे थे, तब एक ऐसा वीर खड़ा हुआ जिसने अपने स्वाभिमान और स्वतंत्रता के लिए कभी समझौता नहीं किया। ९ मई १५४० को कुंभलगढ़, राजस्थान में जन्मे महाराणा प्रताप मेवाड़ के महान योद्धा और शासक थे। उन्होंने अपने जीवन में कई कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन अपने स्वाभिमान को कभी झुकने नहीं दिया। यह एक ऐसे वीर की गाथा है, जिसने हर परिस्थिति में अपने स्वाभिमान और स्वतंत्रता को सर्वोच्च स्थान दिया।



२. कहानी

महाराणा प्रताप का बचपन वीरता और अनुशासन के वातावरण में बीता। उनके पिता, उदय सिंह द्वितीय, उन्हें युद्ध कौशल और राज्य के प्रति जिम्मेदारी सिखाते थे। बचपन से ही प्रताप ने यह सीख लिया था कि सम्मान और स्वतंत्रता किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ी जाती। जैसे-जैसे वे बड़े हुए, उनकी शक्ति और साहस और भी बढ़ता गया। वे एक कुशल योद्धा और सच्चे नेता के रूप में उभरने लगे।

१५७२ में, वे मेवाड़ के राजा बने। उस समय मुगल सम्राट अकबर ने पूरे भारत में अपना साम्राज्य फैलाना शुरू कर दिया था। उसने महाराणा प्रताप को भी अपने अधीन होने का प्रस्ताव दिया, लेकिन प्रताप ने इसे अस्वीकार कर दिया। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि वे अपनी स्वतंत्रता के लिए किसी के आगे झुकेंगे नहीं।

१५७६ में, हल्दीघाटी का युद्ध हुआ, जो उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध था। इस युद्ध में उन्होंने अपने छोटे से दल के साथ विशाल मुगल सेना का सामना किया। उनके प्रिय घोड़े चेतक ने भी अद्भुत वीरता दिखाई और उन्हें युद्ध से सुरक्षित बाहर निकाला।

हालांकि यह युद्ध निर्णायक नहीं रहा, लेकिन महाराणा प्रताप ने हार नहीं मानी। उन्होंने जंगलों और पहाड़ों में रहकर संघर्ष जारी रखा। कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ा। उन्होंने धीरे-धीरे अपनी भूमि को वापस जीतना शुरू किया और मेवाड़ के कई क्षेत्रों को पुनः स्वतंत्र कराया।

महाराणा प्रताप उस अडिग पर्वत की तरह थे,
जो आधियों और तूफानों के सामने भी कभी नहीं झुकता।

उनका जीवन केवल युद्ध की कहानी नहीं है, बल्कि यह दृढ़ संकल्प और आत्मसम्मान की कहानी है। उन्होंने अपने परिवार और प्रजा के साथ कठिन जीवन बिताया, लेकिन कभी अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं किया। उन्होंने अपने अडिग संकल्प और साहस से अपने लोगों को स्वाभिमान और स्वतंत्रता से चार्ज किया, जिससे लोगों के मन में स्वतंत्र रहने का साहस जाग उठा। महाराणा प्रताप ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्चा वीर वही होता है, जो कठिनाइयों में भी अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है।

३. मूल्य और सीख

- अपने स्वाभिमान के साथ कभी समझौता न करें।
- कठिन परिस्थितियों में भी हार न मानें।
- सच्चा साहस वही है, जो सही के लिए खड़ा हो।
- लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प बनाए रखें।
- एक सच्चा नेता अपने लोगों के साथ खड़ा रहता है।

४. संक्षेप

- बचपन से ही वीरता और स्वाभिमान के संस्कार सीखे।
- १५७२ में मेवाड़ के राजा बने।
- हल्दीघाटी के युद्ध में मुगलों का सामना किया।
- संघर्ष के बाद मेवाड़ के कई क्षेत्रों को पुनः स्वतंत्र कराया।
- अपने साहस से लोगों को स्वतंत्रता और स्वाभिमान से चार्ज किया, इसलिए उन्हें “भारत के चार्जर” के रूप

में याद किया जाता है।

५. अभ्यास

- महाराणा प्रताप ने किसके अधीन होने से इंकार किया?
- हल्दीघाटी का युद्ध किसके बीच हुआ था?
- महाराणा प्रताप के घोड़े का नाम क्या था?
- उन्होंने संघर्ष के दौरान कहाँ रहकर युद्ध जारी रखा?

६. प्रेरणास्रोत

“आप अपने जीवन में ऐसा कौन सा सिद्धांत अपना सकते हैं, जिसके लिए आप कभी समझौता न करें?”



“

ज्ञान की ज्योति

“मैं अन्याय के सामने झुकने से बेहतर गरीबी में जीना पसंद करूँगा”

— महाराणा प्रताप

”

— एक सामाजिक पहल —
KDM
भारत का
चार्जर

भारत के चार्ज

वीरांगना राणी लक्ष्मीबाई

साहस के चार्ज

१९ नवंबर १८२८ – १८ जून १८५८

१. परिचय

जब भारत में अंग्रेजों का शासन धीरे-धीरे मजबूत हो रहा था और कई राजा अपने राज्य खो रहे थे, तब एक ऐसी वीरांगना ने जन्म लिया जिसने अन्याय के सामने झुकने से इंकार कर दिया। १९ नवंबर १८२८ को वाराणसी, उत्तर प्रदेश में जन्मी रानी लक्ष्मीबाई झांसी की महारानी थीं। उन्होंने अपने साहस और नेतृत्व से यह साबित किया कि शक्ति और वीरता केवल पुरुषों तक सीमित नहीं होती। यह एक ऐसी वीरांगना की गाथा है, जिसने अपने राज्य और आत्म सम्मान की रक्षा के लिए जीवन के अंतिम समय तक संघर्ष किया।



२. कहानी

रानी लक्ष्मीबाई का बचपन साधारण नहीं था। उनके बचपन का नाम मणिकर्णिका था। वे बचपन से ही निडर और साहसी थीं। उन्होंने घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्ध कला में महारत हासिल की। बचपन से ही उनके भीतर यह स्पष्ट था कि वे कठिनाइयों से डरने वाली नहीं हैं।

बड़े होकर उनका विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव से हुआ और वे झांसी की रानी बनीं। लेकिन कुछ समय बाद उनके पति का निधन हो गया, जिससे राज्य पर संकट आ गया। अंग्रेजों की हड़प नीति के तहत झांसी को अपने अधीन करने का प्रयास किया, लेकिन रानी लक्ष्मीबाई ने इसे स्वीकार करने से साफ इंकार कर दिया। उन्होंने दृढ़ता से कहा, “मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।”

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई ने अपने राज्य की रक्षा के लिए अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध का नेतृत्व किया। उन्होंने अपनी छोटी सी सेना से बड़ी अंग्रेजी सेना का सामना किया। उनका साहस उस समय और भी दिखाई दिया, जब वे अपने छोटे पुत्र दामोदर राव को अपनी पीठ पर बांधकर युद्ध के मैदान में उतरीं। यह दृश्य उनके अटूट साहस और मातृत्व दोनों का प्रतीक था। वे अपने घोड़े बादल पर सवार होकर युद्ध करती थीं और अपनी सेना का नेतृत्व करती थीं। उन्होंने झांसी की रक्षा के लिए अंत तक संघर्ष किया। अंत में, ग्वालियर के पास युद्ध करते हुए उन्होंने वीरगति प्राप्त की, लेकिन अंत तक हार नहीं मानी।

रानी लक्ष्मीबाई उस प्रज्वलित अग्नि की तरह थीं,
जिसने अन्याय के अंधकार को अपने साहस से चुनौती दी।

रानी लक्ष्मीबाई का जीवन केवल एक रानी की कहानी नहीं है, बल्कि यह साहस, आत्मसम्मान और कर्तव्य की पहचान है। उन्होंने अपने साहस और नेतृत्व से पूरे देश को साहस से चार्ज किया, जिससे लोगों के मन में अन्याय के खिलाफ खड़े होने की शक्ति जाग उठी। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्ची वीरता परिस्थिति नहीं देखती, बल्कि दृढ़ संकल्प से जन्म लेती है।

३. मूल्य और सीख

- अन्याय के सामने कभी न झुकें।
- साहस और आत्मविश्वास से हर चुनौती का सामना करें।
- अपने कर्तव्य को सबसे ऊपर रखें।
- कठिन परिस्थितियों में भी हार न मानें।
- दृढ़ संकल्प ही सच्ची शक्ति है।

४. संक्षेप

- बचपन से ही साहस और युद्ध कौशल सीखे।
- झांसी की रानी बनीं और राज्य का नेतृत्व किया।
- अंग्रेजों की लैप्स (हड़प) नीति का विरोध किया।
- १८५७ के संग्राम में वीरता से युद्ध किया।
- अपने साहस से देश को प्रेरित किया, इसलिए उन्हें “भारत के चार्जर” के रूप में याद किया जाता है।

५. अभ्यास

- रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम क्या था?
- उनका जन्म कहाँ हुआ था?

- अंग्रेजों की कौन सी नीति के कारण झांसी पर संकट आया?
- रानी लक्ष्मीबाई के पुत्र का नाम क्या था?

६. प्रेरणास्रोत

“आप अपने जीवन में ऐसा कौन सा साहसिक कदम उठा सकते हैं, जिससे आप कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ सकें?”



“

ज्ञान की ज्योति

“मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।”

- वीरांगना राणी लक्ष्मीबाई

”

— एक सामाजिक पहल —
KDM
भारत का
चार्जर

भारत के चार्जर

महाराजा रणजीत सिंह

एकता और शक्ति के चार्जर

१३ नवंबर १७८० – २७ जून १८३९

१. परिचय

जब उत्तर भारत में कई छोटे-छोटे राज्य आपस में विभाजित थे और बाहरी शक्तियाँ लगातार आक्रमण कर रही थीं, तब एक ऐसे नेता का उदय हुआ जिसने इन बिखरी ताकतों को एकजुट कर एक मजबूत साम्राज्य खड़ा किया। १३ नवंबर १७८० को गुजरांवाला, पंजाब (अब पाकिस्तान) में जन्मे महाराजा रणजीत सिंह सिख साम्राज्य के संस्थापक थे। उन्होंने अपने साहस और नेतृत्व से पंजाब को एक शक्तिशाली और सुरक्षित राज्य में बदल दिया। यह एक ऐसे महान शासक की गाथा है, जिसने अपनी बुद्धिमत्ता और एकता की शक्ति से इतिहास रच दिया।



२. कहानी

महाराजा रणजीत सिंह का बचपन संघर्षों से भरा था। बचपन में ही उन्हें चेचक (Small Pox) हो गया, जिससे उनकी एक आँख की दृष्टि चली गई। लेकिन इस कठिनाई ने उनके साहस को कम नहीं किया, बल्कि उन्हें और मजबूत बना दिया। कम उम्र में ही उन्होंने युद्ध कला और नेतृत्व के गुण सीख लिए। उनके भीतर एक स्पष्ट लक्ष्य था, अपने लोगों को सुरक्षित और संगठित करना।

जब वे युवा हुए, तब पंजाब कई छोटे-छोटे मिसलों (राज्यों) में बटा हुआ था। यह बिखराव बाहरी आक्रमणों को आसान बना देता था। रणजीत सिंह ने यह समझ लिया कि शक्ति एकता में है। उन्होंने धीरे-धीरे विभिन्न मिसलों को एकजुट करना शुरू किया और १८०१ में लाहौर पर अधिकार करके खुद को पंजाब का महाराजा घोषित किया। यह उनके जीवन की एक बड़ी उपलब्धि थी। उनके साहस और नेतृत्व के कारण उन्हें “शेर-ए-पंजाब” के नाम से जाना जाने लगा, जो उनकी निडरता और शक्ति का प्रतीक था। उन्होंने एक मजबूत और अनुशासित सेना का निर्माण किया, जिसे खालसा सेना कहा जाता था। यह सेना अपने समय की सबसे शक्तिशाली और अनुशासित सेनाओं में से एक मानी जाती थी, जिसने उनके राज्य को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रखा।

महाराजा रणजीत सिंह केवल एक महान योद्धा ही नहीं, बल्कि एक न्यायप्रिय और दयालु शासक भी थे। उन्होंने कभी किसी निर्दोष व्यक्ति को हानि नहीं पहुंचने दी और उनके राज्य में न्याय सबसे ऊपर था। उनके शासन में सभी धर्मों को

महाराजा रणजीत सिंह उस विशाल नदी की तरह थे,
जिसने अलग-अलग धाराओं को मिलाकर एक शक्तिशाली और संतुलित प्रवाह बना दिया।

सम्मान दिया जाता था। हिंदू, मुस्लिम और सिख सभी उनके राज्य में सुरक्षित और सम्मानित महसूस करते थे। उन्होंने अपने राज्य में विश्वास और सौहार्द का वातावरण बनाया, जिससे लोग उनके प्रति गहरा प्रेम और सम्मान रखते थे। उनका एक महत्वपूर्ण कार्य था हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) का सौंदर्यीकरण, जिसमें उन्होंने सोने की परत चढ़वाई। यह उनकी धार्मिक आस्था और उदारता का प्रतीक है।

उन्होंने प्रशासन, सेना और समाज को मजबूत बनाकर अपने राज्य को समृद्ध और सुरक्षित बनाया। उन्होंने अपने नेतृत्व और दूरदर्शिता से अपने लोगों को एकता और शक्ति से चार्ज किया, जिससे पंजाब एक मजबूत, सुरक्षित और संगठित साम्राज्य बन गया। महाराजा रणजीत सिंह ने यह सिद्ध किया कि सच्चा नेता वही होता है, जो शक्ति के साथ न्याय और समानता को भी बनाए रखता है।

३. मूल्य और सीख

- एकता में ही सच्ची शक्ति होती है।
- न्याय और समानता का पालन करना चाहिए।
- सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए।
- कठिनाइयों से हार नहीं माननी चाहिए।
- सच्चा नेतृत्व लोगों को जोड़ता है।

४. संक्षेप

- पंजाब के विभिन्न मिसलों को एकजुट किया।

“

ज्ञान की ज्योति

“सच्चा नेतृत्व वही है, जो शक्ति के साथ न्याय और समानता को बनाए रखता है।”

- महाराजा रणजीत सिंह से प्रेरित

”

- १८०१ में सिख साम्राज्य की स्थापना की।
- खालसा सेना का निर्माण कर राज्य को मजबूत बनाया।
- अपने नेतृत्व से लोगों को एकता और शक्ति से चार्ज किया, इसलिए उन्हें “भारत के चार्जर” के रूप में याद किया जाता है।

५. अभ्यास

- महाराजा रणजीत सिंह का जन्म कहाँ हुआ था?
- उन्हें किस नाम से जाना जाता था?
- उन्होंने किस सेना का निर्माण किया?
- उन्होंने किस धार्मिक स्थल का सौंदर्यीकरण करवाया?

६. प्रेरणास्रोत

“आप अपने जीवन में लोगों के बीच विश्वास और एकता कैसे बढ़ा सकते हैं?”



— एक सामाजिक पहल —
KDM
भारत का
चार्जर